समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२० • वर्ष : २४ • अंक : २ (निरंतर अंक : २७८)
• भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

मन का रुख मोड़कर महान आत्मा हो जाओ

पढ़ें पृष्ठ ३

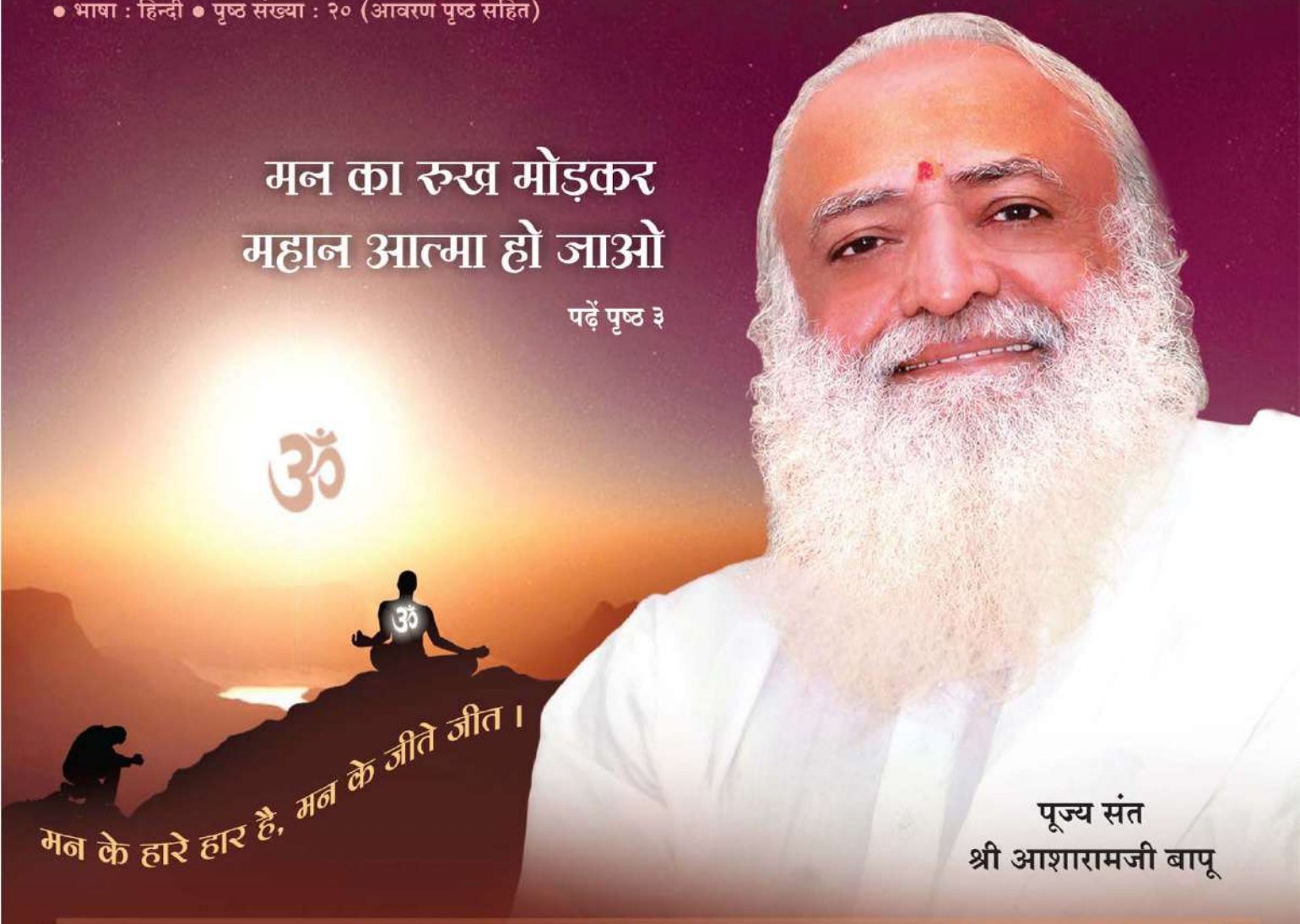

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

जैसे एक पुल नदी के दो किनारों को जोड़ता है, ऐसे ही परमात्मा एवं जगत को जोड़नेवाले सेतु का नाम है मन। मन अगर शरीर एवं संसार को 'मैं-मेरा' मानकर चलता है तो नश्वर संसार में ही जीवन खप जाता है लेकिन वही मन अगर परमात्मा को ही अपना वास्तविक स्वरूप मान के उसे पाने का यत्न करता है तो शाश्वत, अमर पद को पा लेता है।

– पूज्य बापूजी

कलश मांगलिकता का प्रतीक क्यों ?

११

राष्ट्रभाषा अपनायें, आत्मसम्मान जगायें

राष्ट्रभाषा दिवस : १४ सितम्बर ८

प्राणवायु का ऐसे रखें खयाल

१५

चौथी मंजिल से गिरकर भी जीवित व सुरक्षित !

१३

जंक फूड, फास्ट फूड हैं धीमे जहर

१३

प्रार्थना किये जा... उसके यहाँ सुनवाई होती है ! - पूज्य बापूजी

जो भगवान को पाना चाहे वह सुबह और रात को जरूर प्रार्थना करे और जो संसार को पाना चाहे वह सुबह में, दोपहर में, शाम में व रात में और बड़ी समस्या है तो ९ बार प्रार्थना करे और उन दिनों में अन्न-जल थोड़ा कम कर दे, बड़बड़ कम कर दे। कोई भी संसार की समस्या हो, प्रार्थना उसे दूर करती है। मान लो बड़े-बड़े भारी विघ्न आ गये हैं, चारों तरफ मुसीबत आ गयी है, अब बचने का कोई रास्ता नहीं... शत्रुओं के हाथ में खतरनाक कातिल हथियार हैं और भाग्य ने पीठ फेर ली है तो भी डरो मत ! ऐसे और भी कई कष्ट, विघ्न-बाधाएँ हों तो शांतमना होकर दृढ़ विश्वास और श्रद्धा-भक्ति से प्रार्थना करो और ऐसा नहीं हो रहा है तब भी प्रार्थना किये जाओ। कभी तो भनक पड़ेगी अंतर्यामी राम के कान में।

'जीवन की शाम हो जाय उसके पहले हे जीवनदाता ! तुम्हारे में विश्रांति मिल जाय। तुम्हें साकाररूप में न भी पाऊँ तो भी तत्त्वरूप से तुम मेरे अंतरात्मा हो। सुख-दुःख, जन्म-मृत्यु नश्वर हैं। आत्मा-परमात्मा तो नित्य ज्ञानस्वरूप है, चैतन्यस्वरूप है। ॐ प्रभुजी ॐ... ॐ ॐ शांति... आनंददेवा !... केवल तुम्हें जो अच्छा न लगता हो वह न करूँ, बस ! तो फिर तुमको जो अच्छा लगे वही होगा फिर तुम और हम दूर कहाँ हैं !' यह प्रेम और दुलार की प्रार्थना है। ध्रुव ६ महीने में सफल हो गये भगवान को प्रकट करने में।

भगवान की प्रार्थना और भक्ति कर्म का फल लेने के लिए नहीं हैं, कर्म अपना फल देने में वैसे ही समर्थ है। भगवान की प्रार्थना और भक्ति सहयोग लेने के लिए हैं। हम अपनी बुद्धि और कर्म से कर्मबंधन से छुटकारा नहीं पा सकते हैं किंतु भगवान की प्रीति, स्मृति और दया से, उसकी उदार करुणा से ही हम उसे पा सकते हैं और नचा सकते हैं, ऐसी उसीकी तो कृपा है ! और उसके यहाँ सुनवाई होती है।

दृढ़ विश्वास, शुद्ध भाव एवं भगवन्नाम से युक्त प्रार्थना छोटे-से-छोटे व्यक्ति को भी उन्नत करने में सक्षम है। प्रार्थना करो, मौन हो जाओ... प्रेम से पुकारो, चुप हो जाओ... भाव को जगाओ, शांत हो जाओ... इस प्रकार करने से प्रार्थना और प्रेम का प्रभाव बहुत बढ़ जाता है।

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २४ अंक : २ (निरंतर अंक : २७८)
प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२० मूल्य : ₹ ३.५०
पृष्ठ संख्या : २८ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org, *ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ३५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ६०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १३०		
(४) आजीवन :	₹ ३४०		

इस अंक में...

- मन का रुख मोड़कर महान आत्मा हो जाओ..... ४
- अगर तुम्हें भगवान के दर्शन करने हैं तो..... ६
- इन लक्षणों को आत्मसात् कर सर्वज्ञता पायें..... ७
- सुख की आशा में मिर्चें खा रहे हैं.....८
- राष्ट्रभाषा अपनायें, आत्मसम्मान जगायें.....१०
- आत्मोन्नति का प्रथम सोपान -साँईं लीलाशाहजी..... ११
- समत्व कब आता है ? - स्वामी अखंडानंदजी.... १२
- आपके घर या दिमाग में ऐसा अपशकुनी खाली घड़ा तो नहीं है ?...१३
- कलश मांगलिकता का प्रतीक क्यों ?..... १५
- चौथी मंजिल से गिरकर भी सुरक्षित ! - अर्जुनकुमार.....१६
- भगवत्प्रेम बिना सब व्यर्थ है..... १७
- गुबरैले जैसा नहीं, चींटी जैसा बनिये..... १८
- पूज्य बापूजी ने तो था पहले ही बताया.....१९
- प्राणवायु का ऐसे रखें खयाल..... २१
- शरद ऋतु की स्वास्थ्य-समस्याओं में लाभकारी उत्पाद..... २२
- स्थितप्रज्ञ महापुरुषों की अनुभूति..... २४
- उसे कौन जान सकता है ?.....२६

* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।
* 'प्रार्थना' चैनल जम्मू में TechOne Cable पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *

TAKE 1 PRARTHANA
रोज सुबह ७ व रात्रि ९ बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १०-०० बजे

मंगलमय इंटरनेट चैनल
www.ashram.org/live
पर उपलब्ध

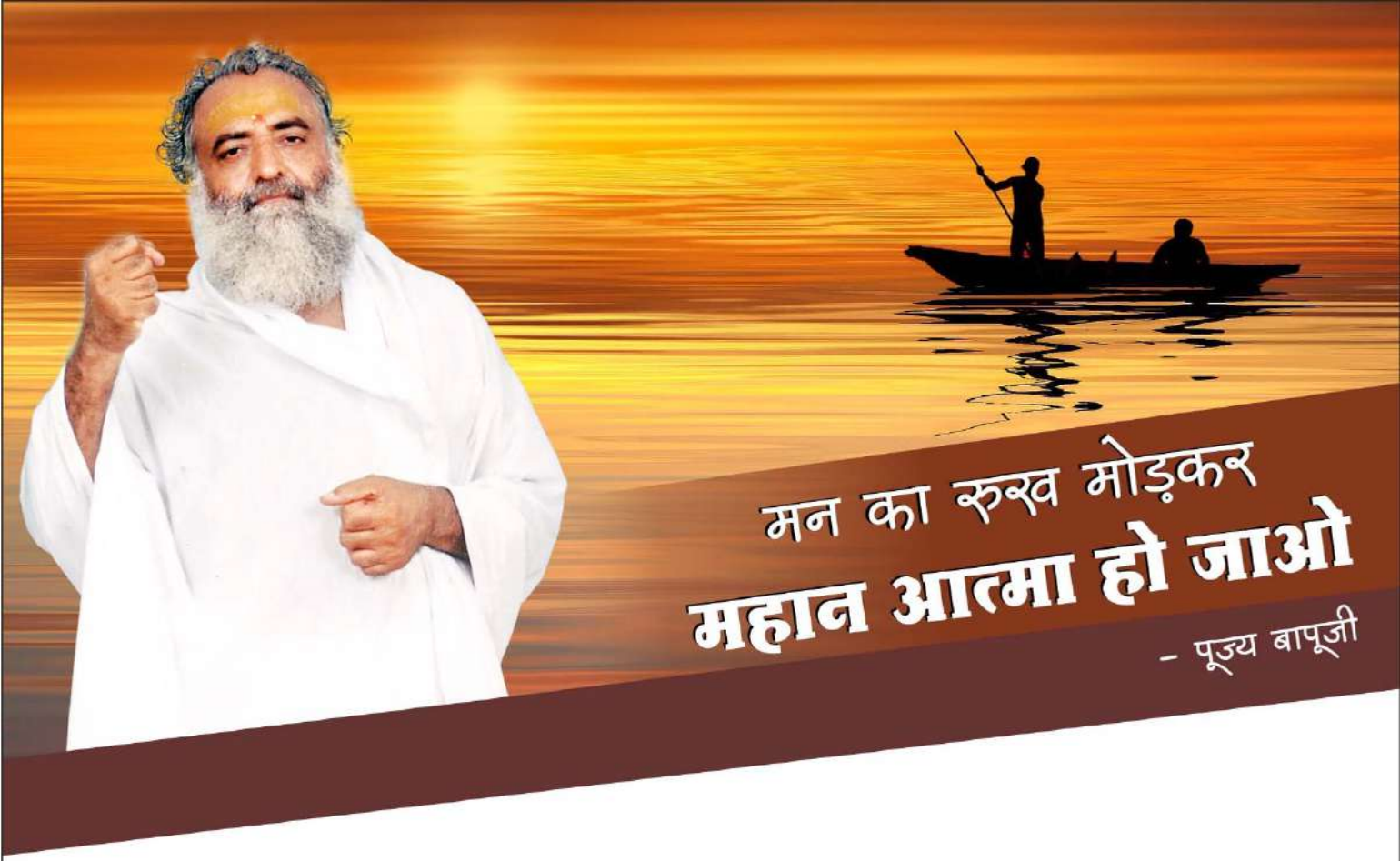

मन का रुख मोड़कर महान आत्मा हो जाओ

- पूज्य बापूजी

जैसे सागर से लहरियाँ उठती हैं, ऐसे ही सच्चिदानंद परब्रह्म-परमात्मारूपी सागर से आपका मन उभरता है । मन के दो छोर हैं : चैतन्यस्वरूप परमात्मा और संसार।

जैसे एक पुल नदी के दो किनारों को जोड़ता है, ऐसे ही परमात्मा एवं जगत को जोड़नेवाले सेतु का नाम है मन । मन अगर शरीर एवं संसार को 'मैं-मेरा' मानकर चलता है तो नश्वर संसार में ही जीवन खप जाता है लेकिन वही मन अगर परमात्मा को ही अपना वास्तविक स्वरूप मान के उसे पाने का यत्न करता है तो शाश्वत, अमर पद को पा लेता है।

किन्हीं महापुरुष ने ठीक ही कहा है :

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।
मन से ही तो पाइये, पारब्रह्म की प्रीत ।।

मन से मनुष्य संसार-बंधन में बँधता है एवं मन से ही इससे मुक्त होता है। शास्त्रों में भी कहा गया है :

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।

'मन ही मनुष्यों के बंधन एवं मोक्ष का कारण है।'

मन है प्रकृति का और कल्पना होती है मन की। प्रकृति परिवर्तनशील है तो मन भी परिवर्तनशील है और मन परिवर्तनशील है तो कल्पना भी परिवर्तनशील है । इसलिए अपने मन को ऐसा बनाओ कि दुःख का प्रभाव न पड़े और सुख की गुलामी न रहे। मन को मन से जगाओ। जैसे उधार के पैसों से तीर्थयात्रा करनेवाला व्यक्ति यात्रा का गर्व नहीं करता, दूसरे के सहारे नदी पार करनेवाला व्यक्ति तैरने का अभिमान नहीं करता, जन्मांध देखने का गर्व नहीं करता, विधवा सुहागिन होने का गर्व नहीं करती, ऐसे ही इस मन को किसी चीज का गर्व न होने दो क्योंकि परमात्मा के बिना वह कंगाल है, परमात्म-सत्ता के बिना वह विधवा जैसा है। परमात्म-चेतना के बिना मन जन्मांध है। मन को परमात्मा की चेतना मिलती है, परमात्मा का सुहाग एवं ऐश्वर्य मिलता है। ऐसी समझ से मन को समझदार बनाओ।

ऐसा यत्न करना चाहिए

दुःखी होने का अभिमान न करो। 'मैं दुःखी

सुख की आशा में मिर्चें खा रहे हैं

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन घूमते हुए सब्जीमंडी में जा पहुँचा। देखा कि बहुत लोग एक लाल चीज खरीद रहे हैं। उसने सोचा, 'जरूर यह यहाँ का कोई विशिष्ट खाद्य पदार्थ होगा !' उसने दो किलो मिर्च खरीदी और एक पेड़ के नीचे बैठकर खाने लगा। पहली मिर्च चबाते ही उसका मुँह जलने लगा, आँखों से, नाक से पानी बहने लगा। बड़ी दयनीय अवस्था थी। कराहता था, फिर दूसरी मिर्च उठाकर मुँह में रख लेता था। सोच रहा था, 'शायद यह पहली से अच्छी होगी।' इस तरह नसरुद्दीन एक के बाद दूसरी मिर्च खाता जा रहा था। कष्ट तो बहुत था पर हर बार यह सोचता था कि 'शायद यह मिर्च पहलेवाली से बेहतर होगी।'

हम सब नसरुद्दीन की ही तरह हैं। हम सब स्वयं ही खरीदी हुई समस्याओं की मिर्चें इस आशा से खाते जा रहे हैं कि कल जो मिर्च खायेंगे वह, नहीं तो अगलीवाली, नहीं तो उससे अगलीवाली, पहलीवाली से बेहतर होगी। हम उसी मिर्च को एक-दूसरे को भी खिलाते रहते हैं और आशा करते हैं कि किसी दिन, कहीं वह मीठी लगने लगेगी। पर सच यह है कि आज हमारा मुँह जल रहा है, आँखों से, नाक से पानी बह रहा है।

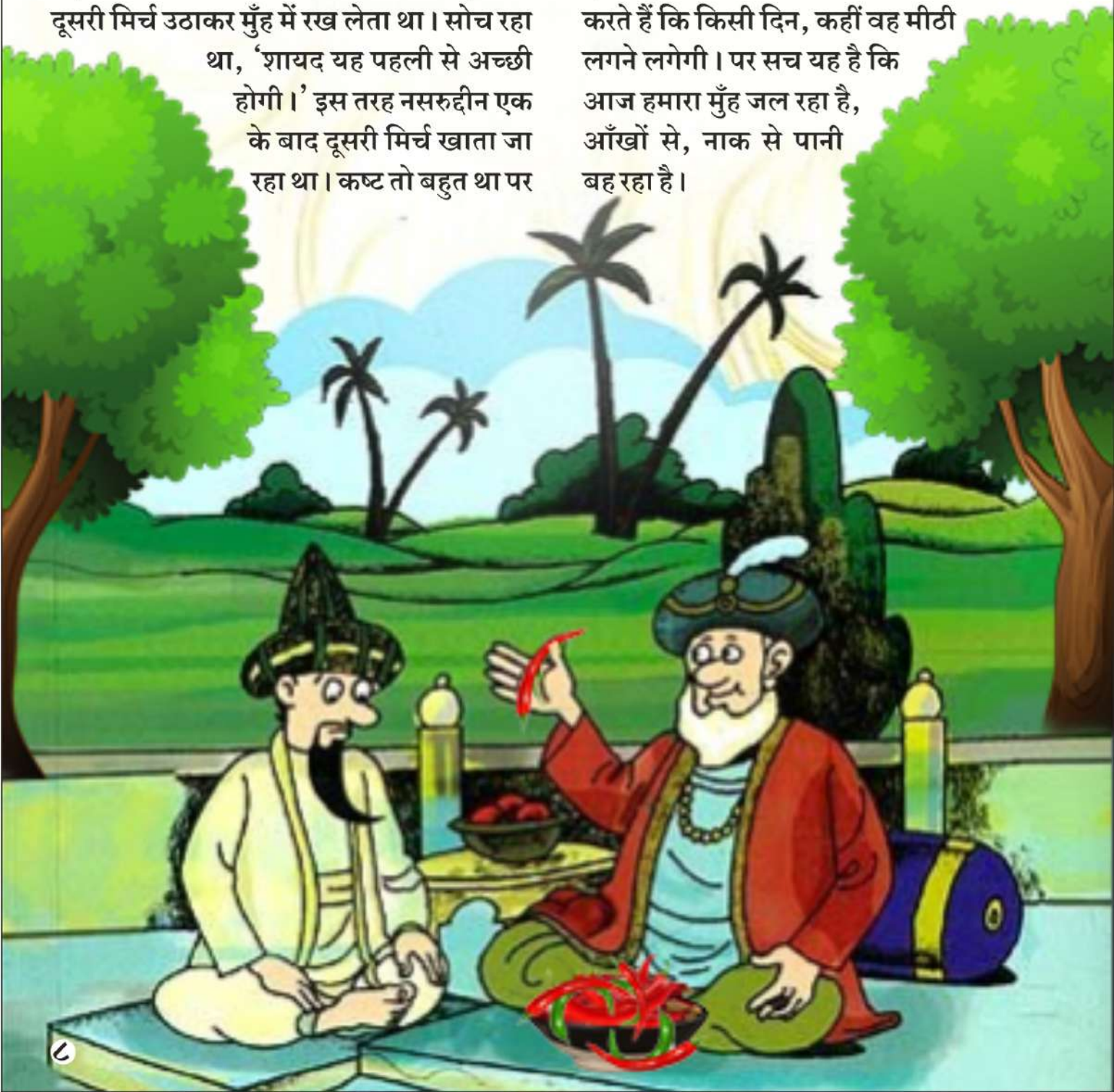

तो जबकि हम लोग रजाई ओढ़ते तब उनको पसीना होता था, पंखा हाँकना पड़ता था अर्थात् उनको सर्दी सहने का तो खूब अभ्यास था परंतु वहाँ की गर्मी वे बिल्कुल नहीं सह सकते थे। हम लोग गर्मी सह सकते हैं, सर्दी नहीं सह सकते। लेकिन अगर जीवन में तत्त्व का विचार करना है, ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना है तो सर्दी और गर्मी - दोनों में समबुद्धि होनी चाहिए। माने सर्दी मिटाने के लिए इतने चिंतित न हो जायें कि ब्रह्मविचार छूट जाय और गर्मी मिटाने के लिए इतने चिंतित न हो जायें कि ब्रह्मविचार छूट जाय। चाहे सर्दी हो चाहे गर्मी, उसमें ब्रह्मविचार बना रहना चाहिए। वेदांत में ज्ञानदृष्टि की प्रधानता है।

आपके घर या दिमाग में ऐसा अपशकुनी खाली घड़ा तो नहीं है ?

एक नाई जा रहा था। एक पेड़ के नीचे अचानक उसे सुनाई दिया कि 'सात घड़ा धन लेगा ?'

उसके मन में लालच पैदा हुआ और वह जोर से बोल उठा : ''हाँ, लूँगा !''

त्यों ही उसे फिर वही आवाज सुनाई दी : ''अच्छा, तेरे घर पर रख आया हूँ, जा ले ले।''

नाई ने घर आकर देखा, सचमुच ही सात बड़े-बड़े घड़े रखे हुए थे। उसने सब घड़ों को खोलकर अच्छी तरह देखा तो ६ घड़े तो सोने की मुहरों से भरे थे पर सातवाँ घड़ा कुछ खाली था। उसके मन में सातवें घड़े को भी पूरा भरने की तीव्र इच्छा उठी और उसने घर में जितना भी धन, गहने आदि थे, वह सब लाकर उस घड़े में डाल दिया। पर भला इतने से वह घड़ा कैसे भरता ! घड़े को पूरा भरने के लिए नाई बड़ा व्याकुल रहने लगा। घर-गृहस्थी के खर्च में कटौती करते हुए वह बचा हुआ सारा धन घड़े में डालने लगा। पर वह घड़ा भरता ही न था। अंत में उसने राजा से प्रार्थना की कि उसे जो वेतन मिलता है, उससे उसका गुजारा नहीं हो पाता, दया करके वेतन बढ़ा दिया जाय। राजा उस नाई पर खुश था। राजा ने वेतन दुगना कर दिया। पर नाई की दशा पहले जैसी ही रही। अब तो वह

कलश
मांगलिकता का प्रतीक क्यों ?

सनातन धर्म में किसी भी शुभ कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व कलश-स्थापना की परम्परा है। विवाह आदि शुभ प्रसंगों, उत्सवों तथा पूजा-पाठ, गृह-प्रवेश, यात्रारम्भ आदि अवसरों पर घर में भरे हुए कलश पर आम के पत्ते रखकर उसके ऊपर नारियल रखा जाता है और कलश की पूजा की जाती है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत कलश का उपयोग किसी-न-किसी रूप में होता रहता है। दाह-संस्कार के समय व्यक्ति के जीवन की समाप्ति के सूचकरूप में उसके शव की परिक्रमा करके जल से भरा मटका छेदकर खाली किया जाता है और उसे फोड़ दिया जाता है।

कलश में सभी देवताओं का वास माना गया है। हमारे शास्त्र में आता है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश की त्रिपुटी एवं अन्य सभी देवी-देवता, पृथ्वी माता और उसके सप्तद्वीप, चारों वेदों का ज्ञान एवं इस संसार में जो-जो है वह सब इस कलश-जल में समाया हुआ है।

समुद्र-मंथन के समय अमृत-कलश प्राप्त हुआ था। माना जाता है कि माँ सीताजी का आविर्भाव भी कलश से हुआ था। लंकाविजय के बाद भगवान श्रीराम अयोध्या लौटे तब उनके राज्याभिषेक के समय भी अयोध्यावासियों ने अपने घरों के दरवाजे पर कलश रखे थे।

भरा हुआ कलश मांगलिकता का प्रतीक है। मनुष्य-शरीर भी मिट्टी के कलश अथवा घड़े के जैसा ही है। जिस शरीर में जीवनरूपी जल न हो वह मुर्दा शरीर अशुभ माना जाता है। इसी तरह खाली कलश भी अशुभ माना जाता है। शरीर में मात्र श्वास चलते हैं, वह वास्तविक जीवन नहीं है

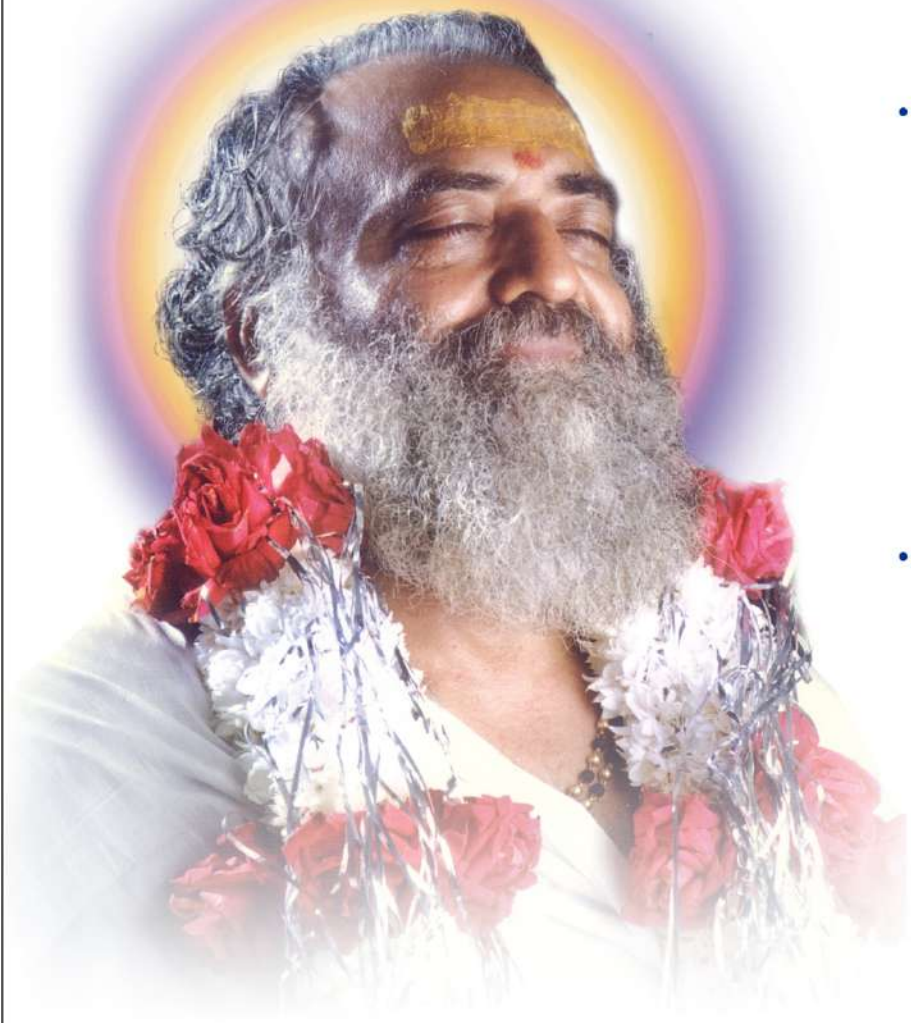

स्थितप्रज्ञ महापुरुषों की अनुभूति

आकाशवाणी

पूर्व में आकाशवाणी, वडोदरा द्वारा प्रसारित
पूज्य बापूजी का
लोक-कल्याणकारी संदेश

('भक्ति की सरल सीढ़ी और सत्संग की श्रेणियाँ' गतांक से आगे)

प्रस्तोता (Host) : बापू ! स्थितप्रज्ञ की बात गीता में कही गयी है और गंगा सती का भजन देखें तो उसमें भी ऐसा कहा गया है : मेरु तो डगे पण जेनां मनडां न डगे... (सुमेरु पर्वत तो कभी डिग जाय लेकिन जिसका मन न डिगे...)

पूज्य बापूजी : भगवान श्रीकृष्ण के अनुभव, पानबाई के अनुभव और संत तुकारामजी के अनुभव में एकत्व है। उसमें व्याख्या करने की भाषा अलग-अलग रीति की होती है पर जो भगवान श्रीकृष्ण ने कहा वही अनुभव अभी किसीको आत्मसाक्षात्कार होता है तो होगा। जो नानकजी को अनुभव हुआ वही उसको भी होगा।

अभी मनुष्य के पास सत्ययुग का खान-पान और शरीर नहीं है पर उस समय के जिन लोगों को ब्रह्मज्ञान हुआ था और जो अनुभूति हुई थी वही आद्य शंकराचार्यजी को, संत कबीरजी को, साँईं लीलाशाहजी को हुई और वही अभी के मनुष्य को होगी। सत्य सनातन है, एकरस है इसलिए इसमें अगर डुबकी लगायी तो युग जो भी हो, युग का प्रभाव सत्य पर नहीं होता।

हर व्यक्ति को अनुभव एक जैसा होता है क्योंकि सत्य तो सत्य ही है। **यस्य सत्ता त्रिकाल अव्यभिचरति सत्यम्**। 'जिसकी सत्ता तीनों कालों में अबदल, ज्यों-की-त्यों रहती है वह

घृतकुमारी (Aloe vera) व नीम युक्त

हरि ॐ हैंड सैनिटाइजर

९९.९ % कीटाणुओं को तुरंत मार भगाने में सक्षम !

बाजार, अस्पताल, ऑफिस, कार में हों या हों यातायात में... खेलकूद, खाँसने-छींकने अथवा सार्वजनिक स्थानों से आने के बाद... बीमार व्यक्ति या पालतू पशुओं को छूने के बाद... अर्थात् कहीं भी, कभी भी... साबुन और पानी की अनुपलब्धता में भी रखें हाथों को कीटाणुमुक्त ।

घृतकुमारी रस (Aloe vera juice)

ऑरेंज फ्लेवर में

विविध त्वचा-विकारों, पीलिया, नेत्र व स्त्री रोगों, आंतरिक जलन आदि में लाभदायी । त्रिदोषशामक, जठराग्निवर्धक एवं यकृत (liver) के लिए वरदानरूप।

हरड़ रसायन गोली

हरड़ रसायन गोली चूसकर खायें, पाचन-समस्या को दूर भगायें...

यह अपचित भोजन को पचानेवाला व शरीर में स्थित कच्चे रस को पकाकर शरीर को शुद्ध करनेवाला उत्तम रसायन योग है । ये गोलियाँ त्रिदोषशामक हैं । इन्हें चूसकर खाने से भूख खुलती है । ये छाती व पेट में संचित कफ को नष्ट करती हैं ।

रसायन टेबलेट

ये गोलियाँ शक्ति, स्फूर्ति, ताजगी तथा दीर्घ जीवन देनेवाली हैं । जीर्णज्वर, वीर्यदोष, मूत्रसंबंधी रोग, स्वप्नदोष आदि में लाभदायी हैं । ये बढ़ती उम्र के साथ आनेवाली कमजोरी एवं रोगों से रक्षा करती हैं ।

रोगी-निरोगी सभी इन्हें ले सकते हैं । निरोगी व्यक्ति को दीर्घ आयुष्य हेतु ४० वर्ष की उम्र के बाद इनका सेवन विशेषरूप से करना चाहिए ।

त्रिफला टेबलेट

ये गोलियाँ आँखों की सूजन, लालिमा, दृष्टि की कमजोरी, कब्ज, मधुमेह (diabetes), मूत्ररोग, त्वचा-विकार, जीर्णज्वर व पीलिया में लाभदायक हैं ।

नीम तेल

यह घाव को शीघ्र भरनेवाला, बालों के लिए हितकारी, कृमिनाशक व चर्मरोगों में उपयोगी है । दाद, खाज, खुजली, शरीर पर लाल चकत्ते निकलना, नये एवं पुराने घाव, हाथीपाँव आदि में लाभकारी है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७३०, ९२१८१११२३३. ई-मेल : contact@ashramestore.com

सत्र २०१९-२० की बोर्ड-परीक्षा के उत्कृष्ट परिणाम

अहमदाबाद (गुजराती माध्यम), धुलिया, कोटगढ़ (ओड़िशा), लुधियाना गुरुकुलों के १०वीं बोर्ड के परीक्षा-परिणाम १००% रहे। अहमदाबाद, भोपाल, जयपुर गुरुकुलों के १२वीं बोर्ड के परीक्षा-परिणाम भी १००% रहे।

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2018-20
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2020
LWPP No. PMG/HQ/045/2018-20
(Issued by PMG GUJ. valid upto 31-12-2020)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

१०वीं राज्य बोर्ड परीक्षा-परिणाम

(A+ ग्रेड = ९०% से अधिक
PR = Percentile Rank)

कन्हैया कुमार झा, लुधियाना, A+ | पूजा सिंह, लुधियाना, A+ | ओमिका चौहान, लुधियाना, A+ | अभिषेक पाल, भोपाल, ९१% | शिवम मगर, धुलिया, ८९.६०% | पार्थ वर्मा, रायपुर, ८६.१०% | पार्थ वर्धेकर, अहमदाबाद, ९८.८५ PR | हरिश्चन्द्र अहिरे, धुलिया, ८५% | पृथु सुतारिया, सूरत, ९८.३२ PR | तेजस पटेल, अहमदाबाद, ९८.०८ PR

वेदांत नवादिया, सूरत, ९७.९० PR | सिमरन सादत, दंतोड़, ९४.७३ PR | शैफी तबियाड, दंतोड़, ९४.६२ PR | रोशन मुखिया, सूरत, ९४.२९ PR | मीरा सोमैया, राजकोट, ९३.९५ PR | सोमेश सिंह भदौरिया, अहमदाबाद, ९३.७१ PR | रामेश्वर गणासवा, अहमदाबाद, ९३.६० PR | गुरुवीर सिंह भदौरिया, अहमदाबाद, ९२.१९ PR | भावना गमारा, राजकोट, ९१.५० PR | तन्मय चौहान, सरकी लिमड़ी, ९१.२२ PR

१०वीं सी.बी.एस.ई. बोर्ड परीक्षा परिणाम

आयुष कुमार, इंदौर, ९७% | प्रशांत चौरे, छिंदवाड़ा, ९५% | खुशी कुकरेजा, छिंदवाड़ा, ९४.६०% | दीक्षा दृष्टि, छिंदवाड़ा, ९२.८०% | कृष्णहरि सोलंकी, इंदौर, ९२.६०% | हरिओम पाटीदार, इंदौर, ९२% | पूर्णांश शर्मा, इंदौर, ९०% | वेंकटेश्वर गुथारे, इंदौर, ८७%

तुषाल हसानी, भोपाल, ८५% | सलोनी मेवाड़ा, भोपाल, ८४.६०% | दीक्षा, आगरा, ८४.२०% | संदीप कुमार, आगरा, ८४% | विवेक सारस्वत, आगरा, ८३.२०% | हरिओम दास, भोपाल, ८०.६०% | अनुराधा मीणा, जयपुर, ८०.२०% | आकर्ष द्विवेदी, इंदौर, ८०%

१२वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम

यश अग्रवाल, छिंदवाड़ा, ९३.४०% | प्रिंस द्विवेदी, इंदौर, ९३% | खुशबू भोयर, छिंदवाड़ा, ९२.४०% | बाल गोविंद, छिंदवाड़ा, ९२% | दीपिका राणा, आगरा, ९१.६०% | अम्बिका सनोडिया, छिंदवाड़ा, ९१.२०% | सागर सोनी, रायपुर, ९०.६०% | उदित किरार, भोपाल, ९०.४०%

प्रियंक पटेल, अहमदाबाद, ९९.८० PR | राजवीर सैनी, जयपुर, ८८.४०% | आर्यन मोयल, इंदौर, ८६% | पार्थ जोशी, भोपाल, ८५.८०% | साकेत कुमार, जयपुर, ८५.६०% | हरिओम गुर्जर, जयपुर, ८४.२०% | मनीष प्रजापति, अहमदाबाद, ९५.८९ PR | शिवम वर्मा, अहमदाबाद, ९२.०२ PR